B.A. History Hon's, Part-II
Paper: IV, Unit: III(a), Date: 14. 8. 2020, Lecture No.: 20
Lesson: हिन्दचीन (इन्डो-चाइना) में राष्ट्रीय आन्दोलन

हिन्दचीन में पहला फ्रांसीसी गवर्नर-जनरल पॉल डूमर था। वह अपने पद पर 1897 से 1902 तक बना रहा। उसने वहाँ उत्तम शासन-प्रबन्ध किया। उसके उत्तराधिकारी पॉल बो ने 1902 से 1907 तक शासन किया। टोंकिन में एक सलाहकार-सदन की स्थापना की तथा प्रान्तीय परिषदें भी कायम कीं। देशी पदाधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए विद्यालय खोले गए। उसका उत्तराधिकारी एल्बर्ट सरौत ने 1911 से 1914 तक शासन किया। वह भी 'सहयोग-नीति' का समर्थक था। किन्तु फ्रांस हिन्दचीन में औपनिवेशिक स्वशासन की स्थापना के पक्ष में नहीं था।

सिद्धांत: गवर्नर-जनरल को निरंकुश अधिकार प्राप्त थे। वह उपनिवेश मंत्री के निदेशालय नियंत्रण के अधीन काम करता था। साथ ही गवर्नर-जनरल कोई पेशेवर औपनिवेशिक प्रशासक नहीं था। उसकी सहायता के लिए आर्थिक एवं वित्तीय हितों की एक उच्च परिषद थी। इसमें उच्च फ्रांसीसी और हिन्दचीनी अधिकारी, कोचीन चीन की औपनिवेशिक परिषद के प्रतिनिधि, वाणिज्यमंडल और कृषि के सदस्य थे। हिन्दचीन फ्रांस के औपनिवेशिक मंत्रालय के प्रत्यक्ष शासन में था। इसकी अनाम, कम्बोडिया, लाओस और टोंकिन संरक्षित राज्य थे। कोचीन चीन का शासन गवर्नर द्वारा होता था जिसकी सहायता के लिए एक प्रिवी कौंसिल और एक औपनिवेशिक परिषद व्यवस्थापिका परिषद की तरह थी। प्रशासन का अध्यक्ष रेज़िडेन्ट सुपीरियर था जिसकी सहायता के लिए एक प्रिवी कौंसिल और संरक्षण-परिषद थी।

कोचीन में फ्रांसीसी शिक्षानीति का मुख्य उद्देश्य फ्रांसीसी दुभाषिए को पैदा करना था। 1906 में पॉल बो ने सार्वजनिक शिक्षा का पुनर्गठन किया। 1909-10 में इसे कोचीन-चीन में लागू किया गया। 1913 तक 12,103 छात्र सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में थे। कम्बोडिया और लाओस में शिक्षा के मुख्य केन्द्र थे। प्रथम विश्वयुद्ध-काल में फ्रांसीसी नीति का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक स्वामिभक्ति उत्पन्न करना था। 1915 में टोंकिन में पारम्परिक प्रतियोगिता परीक्षा का उन्मूलन कर दिया गया। 1917 से 1919 तक सराउत दूसरी बार हिन्दचीन का गवर्नर-जनरल था। उसके प्राथमिक शिक्षा का रूप के अन्तर्गत कर दिया। किन्तु यह प्रयोग काफी महँगा पड़ा, फलत: इसे त्याग दिया गया। 1924 में पुन: वर्नाक्यूलर और फ्रेंच वर्नाक्यूलर स्कूल अलग-अलग कर दिये गए। 1899 में हनोई में प्राच्य शिक्षा केन्द्र खोला गया। 1907 में हनोई विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। यहाँ के छात्र राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत थे। फलत: 1908 में हनोई विश्वविद्यालय बन्द कर दिया गया। यद्यपि वियतनामी संस्कृति प्रधानत: चीनी ही रही, तथापि 939 ई. में वे चीन की दासता से मुक्त हो चुके थे। 1898 ई. में पेई ने चीनी सम्राट की क्रांतिकारी सुधारों की एक योजना प्रस्तुत की थी जिसमें पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति के अध्ययन की सिफारिश की गई थी। वियतनामी मांटेस्क्यू, रूसो और वाल्तेयर के रचनाओं से परिचित थे।

1904-5 के रूस-जापान युद्ध ने वियतनामी राष्ट्रवाद को काफी प्रभावित किया। युद्ध में जापान की विजय से उत्साहित होकर वियतनामियों ने क्रांतिकारी आन्दोलन शुरू किया। जिसका मुख्य कार्यालय टोकियो था। उसका नेता फानबोई चाऊ था। किन्तु 1910 में वे जापान से निष्कासित किए गए। इसके बाद चाऊ कैंटन आ गया। चीनी क्रांति से प्रभावित होकर उसने 1912 में एक राजनीतिक दल का निर्माण किया जिसे वियतनाम-पुनर्स्थापन समिति कहते हैं। युद्धोत्तर-काल में अनेक राजनीतिक दल सामने आए। युद्धकाल में अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन के चौदह-सूत्रों की घोषणा की थी जिनमें एक सूत्र आत्म-निर्णय का था।

संविधानवादी दल के नेता सम्राट से दिह था। 1922 में वह पेरिस गया। उसने फ्रांसीसी
सरकार के दमननीति त्याग देने तथा अनाम और तोंकिन में वियतनामियों का सहयोग
प्राप्त करने का अनुरोध किया। कालान्तर में विन्ह पुई ब्लो दाए के नाम से प्रसिद्ध बना।
तोंकिन दल का नेता, फाम क्युन्ह एक पत्रकार था जिसने संवैधानिक सुधार की माँग
की। फ्रांसीसियों ने अनाम और तोंकिन में सलाहकार सभाओं की स्थापना की। किन्तु
उन्हें कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त न थी।
कोचिन चीन में बुई क्वांग चीऊ ने संविधानिकों का दल का निर्माण
किया। 1923 में वह सुधार-प्रस्तावों को पेश करने के लिए फ्रांस गया। किन्तु उसे
निराश लौटना पड़ा। 1925 में युवक अनाम का क्रांतिकारी दल का गठन किया
गया। किन्तु फूट के कारण दल कमजोर पड़ गया। 1929 में इसके साम्यवादी
सदस्यों के बाहर आ जाने से यह दल टूट गया। 1927 में कोमिंतांग के
समर्थक स्थापित करके तोंकिन में एक वियतनाम राष्ट्रीय दल का निर्माण
किया गया। इसके अधिकांश पत्रकार और शिक्षक थे। जनवरी 1929 में इसने
गवर्नर पैशवर्मोर की हत्या का भी प्रयत्न किया। इसके बावजूद भी फरवरी
1930 में येनबे में विद्रोह हो गया। फ्रांसीसियों ने दमनचक्र तेज कर दिया।
नेताओं की धर-पकड़ शुरू हो गई। वियतनाम राष्ट्रीय दल भंग कर दिया गया।
राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम शुरू हो गया। साम्यवादियों ने इसका नेतृत्व किया।
1925 में कैंटन में प्रवासियों के क्रांतिकारी वियतनामी युवक समिति का निर्माण किया
गया था। कालान्तर में वह होची मिन्ह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह 1890 में उत्तरी
अनाम में उत्पन्न हुआ था। 1911 में वह यूरोप गया। 1918 में वह पेरिस में फ्रांस
के साम्यवादी दल की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय किसान
सम्मेलन में भाग लेने के लिए मास्को भेजा गया था। 1925 में वह कैंटन में
बोरोदीन मंडल में दुभाषिया था। 1927 में जब बोरोदीन मंडल को चीन से निकाल
दिया गया तो होची मिन्ह ने भी चीन छोड़ दिया।
1928 में वियतनामी जन समिति का मुख्यालय हांगकांग स्थानान्तरित
कर दिया गया। किन्तु होची मिन्ह का नियंत्रण हटते ही दल का अनुशासन समाप्त हो गया।
1930 में इसकी एक पुस्तक पेरिस में
जनवरी 1930 में उसे हांगकांग बुलाया गया। 1930 में वियतनाम साम्यवादी दल का मुख्यालय हैफोंग कर दिया गया।
प्रकाशित हुई। 1930 में वियतनाम साम्यवादी दल का मुख्यालय हैफोंग कर दिया गया। किन्तु ब्रिटिश प्रिवी कौंसिल ने
जून 1931 में होची मिन्ह को गिरफ्तार कर लिया गया। किन्तु ब्रिटिश प्रिवी कौंसिल ने
उसकी अपील की सुनवाई की और उसे छोड़ दिया गया। दोनों में भी उपद्रव भड़क
उठा। 1932 में दो साम्यवादी नेता लसम्नान विजाल और ता थू थाउ जो मास्को में
अध्ययन कर रहे थे, स्वदेश लौट आए। 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ होते ही
व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जाने लगा। 1940 में एक क्रमिगत स्थानीय दल ने
कृषक विद्रोह का गठन किया, जिसे शीघ्र ही दबा दिया गया।
1925 में फ्रांसीसियों ने राजकुमार विन्ह थुए को थू की गद्दी पर
आसीन किया और उसने बाओ दाय की राजकीय उपाधि धारण की। इस प्रकार
अन्य दल और नेताओं के विफलता के फलस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन साम्यवादियों
के नेतृत्व में चला गया। यह दल वियत मिन्ह के नाम से प्रसिद्ध है। यह दल
राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने लगा।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर